466वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 39 | एकादश अंक | जून 2017

इस अंक में...

13 सफलता का राज–विनय
14 राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
31 आर्थिक वाणिज्यिक परिदृश्य
38 नवीनतम सामान्य ज्ञान
46 खेलकूद
50 रोजगार समाचार
51 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
53 युवा प्रतिभाएं
57 कैरियर लेख–सिविल सेवा परीक्षा 2017 : प्रारम्भिक परीक्षा से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण पहलू
59 आगामी सिविल सेवा (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष संक्षिप्त टिप्पणियाँ
64 स्मरणीय तथ्य
68 विश्व परिदृश्य
74 फोकस–लिंगमूलक असमानता की शिकार महिलाएं
77 पर्यावरणीय लेख–सामुद्रिक पर्यावरण का महत्व
79 समसामयिक लेख–मराकाश में पेरिस समझौते की पुष्टि
82 आर्थिक लेख–कैशलेस अर्थव्यवस्था : बदलाव का बड़ा कदम
84 ऐतिहासिक लेख–भारत के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व
86 पारिस्थितिकी लेख–पर्यावरण संरक्षण की वर्तमान स्थिति
88 द्विपक्षीय सम्बन्ध–भारत-इण्डोनेशिया सम्बन्धों का दृष्टिकोण : सांस्कृतिक समन्वय से आगे सहयोग की रणनीति
90 सामयिक लेख–आजादी माँगता बलूचिस्तान
92 कृषि-पशुपालन–किसानों का दर्द-कर्ज और आत्महत्या
94 सार संग्रह
98 सामान्य अध्ययन–मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग राज्य सेवा (मुख्य) परीक्षा, 2016
104 सामान्य अध्ययन–(i) 60-62वीं बीपीएससी (प्रा.) परीक्षा, 2017
114 (ii) बैंक ऑफ महाराष्ट्र (पी.ओ.) परीक्षा, 2016
117 (iii) मध्य प्रदेश सब-इंस्पेक्टर पुलिस परीक्षा, 2016
124 (iv) आगामी सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा, 2017 हेतु विशेष हल प्रश्न
135 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
137 समसामयिक आर्थिक/वाणिज्यिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
139 ऐच्छिक विषय–(i) समाजशास्त्र–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
143 (ii) वाणिज्य–यू.जी.सी.-नेट/जे.आर.एफ. परीक्षा, 2016
150 विविध/सामान्य–रेल परिवहन–भारत में रेल प्रणाली : उद्भव, विकास एवं उपलब्धियाँ
155 तर्कशक्ति–रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया अधिकारी ग्रेड 'B' परीक्षा, 2016
162 संख्यात्मक अभियोग्यता–यूनाइटेड इण्डिया इंश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड (ए.ओ.) परीक्षा, 2016
167 क्या आप जानते हैं ?
168 अपना ज्ञान बढ़ाइए
170 सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता क्रमांक–179
173 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध–लोकतान्त्रिक विकेन्द्रीकरण
175 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक-455 का परिणाम
176 English Language–State Bank of India Probationary Officers (Pre.) Exam., 2016

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सफलता का राज–विनय

–साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

''विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम् ।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम् ।।
(विद्या विनय देती है, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है)

विनयी बनो और तुम पूर्ण हो जाओगे
स्वयं को मुड़ने दो (सही रास्ते पर)
और तुम सरल हो जाओगे.
शून्यत्व को प्राप्त करो
और तुम परिपूर्ण हो जाओगे।
स्वयं को वार्धक्यता की ओर बढ़ने दो
और तुम नये हो जाओगे।
थोड़ा ग्रहण करो
और तुम लाभान्वित होवोगे
अधिक समेटो
और तुम ऊहापोह में पड़ जाओगे
अतः सन्त उस एक मात्र को अलिन्गित करता है
और वह स्वर्गिक आभा तले
उदाहरण के योग्य बन जाता है
वह स्वयं का प्रदर्शन नहीं करता
अतः कौंध उठता है
स्वयं को समर्थित नहीं करता
अतः लोगों के बीच विख्यात हो जाता है
स्वयं की क्षमता को बढ़ा-चढ़ा कर नहीं देखता
अतः वह प्रतिष्ठित होता है
स्वयं की सफलता को नहीं भांजता
अतः वह टिका रहता है
किसी के साथ स्पर्धा नहीं रखता
अतः कोई उसे हरा नहीं सकता
अतः पुरातन कथ्य
'विनीत बनो और पूर्णत्व पाओ।'
ये शब्द झूठे नहीं हैं
बल्कि अगर तुमने सच में पूर्णता पा ली है,
हर चीज तुम तक आएगी।।

–लाओत्सु

लाओत्सु के ये वचन हमें जीवन को उसकी पूर्णता में जीने का व सफल हो जाने का मार्ग सुझाते हैं. हर प्रज्ञा सम्पन्न जीवंत महात्मा से यही सुनने को मिलेगा कि 'विनयी होकर पाया जाता है, अहंकारी खो देता है.' समण महावीर ने कहा कि–

'विणओ मूलो धम्मो.'

अर्थात् धर्म का मूल विनय है. आप चाहें जिस किसी क्षेत्र से सम्बद्ध हों, विनम्र होने पर ही सफलता पा सकोगे. विनय होने का अर्थ मात्र सिर झुकाना, नाक व मस्तक रगड़ना, पंचांग या अष्टांग नमन करना ही नहीं है. विनय का यह बहुत स्थूल व औपचारिक रूप है, जहाँ विद्यार्थी अध्यापक के कक्षा में प्रविष्ट होने के साथ ही खड़ा हो जाता है व उसके जाने के समय भी खड़े होकर Thank you Sir बोलता है. अधिकारी के समक्ष कर्मचारी का विनय भी आत्मिक हो न हो, किन्तु व्यावहारिक व औपचारिक तो होता ही है. इस तरह के विनय की बात यहाँ नहीं की जा रही है, विनय का यह अर्थ बहुत स्थूल है, यद्यपि व्यावहारिक है. लाओत्सु कहते हैं कि विनम्र वह जो लचीला है. अपनी गलती या भूलों को स्वीकार करते हुए ही तुरन्त स्वयं को बदल देता है. वह मुड़ने को तत्पर है, जिद्दी या तार्किक नहीं है. बौद्धिक प्रवंचनाएं करना जिसे न सुहाता हो, ऐसा विनयशील सरलता से परिवर्तनों को, नए तत्व, विज्ञान को, प्राप्त मार्गदर्शन को स्वीकारता है और आगे बढ़ता जाता है.

●●●